Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-16*

भारतीय ज्ञान परंपरा और पर्यावरण संरक्षण: एक समकालीन अध्ययन

Ray Singh Solanki, *Assistant Professor, Department of Sociology, PMCOE Government Madhav College,Ujjain (M.P.)*

सारांश : प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित पर्यावरणीय चिंतन का विश्लेषण करता है। वैदिक काल से आधुनिक समय तक भारतीय चिंतन में प्रकृति को सजीव एवं दैवीय स्वरूप में देखा गया है। पंचमहाभूतों की अवधारणा, वसुधैव कुटुम्बकम्, ऋत एवं धर्म का पर्यावरणीय आयाम भारतीय परंपरा की मूलभूत अवधारणाएँ हैं। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र तथा बौद्ध-जैन साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांत प्राप्त होते हैं। चिपको आंदोलन, बिश्नोई परंपरा, पवित्र उपवन एवं जल संरक्षण की पारंपरिक प्रणालियाँ इस ज्ञान की जीवंत अभिव्यक्तियाँ हैं। समकालीन जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता ह्रास एवं जल संकट के संदर्भ में यह परंपरा अत्यधिक प्रासंगिक है।

प्रमुख शब्द: *भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण संरक्षण, पंचमहाभूत, वसुधैव कुटुम्बकम्, पवित्र उपवन, चिपको आंदोलन*

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता ह्रास एवं जल संकट मानवता के लिए गंभीर चुनौतियाँ हैं। इस संकट के मूल में प्रकृति को उपयोग की वस्तु मानने वाली पश्चिमी विश्वदृष्टि है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है, जो प्रकृति को माता, नदियों को माँ, वृक्षों को देवता मानती है। यह शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित पर्यावरणीय अवधारणाओं एवं उनकी समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है।

साहित्य समीक्षा

वन्दना शिवा (1989) ने भारतीय कृषि परंपराओं में स्त्री-प्रकृति संबंध की व्याख्या की। गाडगिल एवं गुहा (1992) ने भारतीय वन एवं जल प्रबंधन की पारंपरिक प्रणालियों का ऐतिहासिक विश्लेषण किया। गुहा (1989) ने चिपको एवं बिश्नोई आंदोलनों का अध्ययन किया। चौग (1993) ने बौद्ध-जैन अहिंसा के पारिस्थितिकी आयाम स्पष्ट किए। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट है कि अधिकांश शोध या तो विशिष्ट स्थानीय परंपराओं पर केंद्रित हैं या दार्शनिक स्तर पर सामान्यीकृत हैं। प्रस्तुत शोध दार्शनिक-ग्रंथीय विश्लेषण एवं लोक-परंपराओं के समन्वय का प्रयास करता है।

शोध उद्देश्य

1. वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, अर्थशास्त्र, बौद्ध-जैन साहित्य में पर्यावरणीय अवधारणाओं का दस्तावेजीकरण करना।
2. पंचमहाभूतों की अवधारणा को पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में व्याख्यायित करना।
3. वसुधैव कुटुम्बकम्, ऋत, धर्म के पर्यावरणीय आयाम स्पष्ट करना।
4. चिपको, बिश्नोई, पवित्र उपवन, जल संरक्षण प्रणालियों का विश्लेषण करना।
5. समकालीन संकटों में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति

यह शोध अंतर्विषयी एवं गुणात्मक है। प्राथमिक स्रोतों में वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, बौद्ध-जैन साहित्य शामिल

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

हैं। द्वितीयक स्रोतों में UGC-CARE शोध-पत्र एवं सरकारी रिपोर्टें हैं। विश्लेषण विधियों में व्याख्या विधि (हर्मेन्यूटिक्स), तुलनात्मक विधि, ऐतिहासिक विधि एवं केस स्टडी विधि का उपयोग किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और पर्यावरण

१. वैदिक साहित्य

ऋग्वेद (१०.१९०.१) में 'ऋत' (ब्रह्मांडीय विधान) की अवधारणा वर्णित है:

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।

"ऋत एवं सत्य की उत्पत्ति तपस्या (ब्रह्मांडीय ऊर्जा) से हुई।"

'ऋत' का अर्थ है ऋतुओं का नियमित आगमन, सूर्योदय-सूर्यास्त, जल-चक्र, तथा संपूर्ण प्रकृति का नियमबद्ध संचालन। यह आधुनिक पारिस्थितिकी के 'प्राकृतिक संतुलन' के सिद्धांत से मेल खाता है। मानव का कर्तव्य है कि वह इस ऋत का उल्लंघन न करे, अन्यथा प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। अथर्ववेद (१२.१.३५) में पृथ्वी संरक्षण का स्पष्ट आह्वान मिलता है:

मा त्वा वृक्षाः शथयन्तु मा त्वा पर्शानयो नृपाः।

"हे पृथ्वी! तुझे वृक्ष न काटें, तुझे प्रस्तर (पत्थर) न तोड़ें।"

वैदिक ऋषियों ने जल-चक्र, भू-आकृति विज्ञान और प्रकृति की अंतर्निहित एकता को गहराई से समझा था। ऋग्वेद (८.९८.२) में कहा गया है कि पृथ्वी को नदियों ने घेर रखा है और समुद्र चारों ओर व्याप्त है - यह जलमंडल की अवधारणा का प्राचीन रूप है। वेदों में प्रकृति के प्रति आदर का भाव इतना गहरा है कि प्रत्येक देवता किसी न किसी प्राकृतिक तत्व का प्रतिनिधित्व करता है - इंद्र वर्षा के देवता, अग्नि ऊर्जा के, वायु प्राण के। यह वैदिक काल में ही एक समग्र पारिस्थितिकी विश्वदृष्टि के विकास को दर्शाता है।

२. उपनिषद

उपनिषदों का मुख्य संदेश ब्रह्म (सार्वभौम चेतना) एवं जगत (प्रकृति) का अभेद है। छांदोग्य उपनिषद (३.१४.१) में कहा गया है:

सर्वं खल्विदं ब्रह्म।

"यह सारा जगत (वृक्ष, नदी, पर्वत, जीव-जंतु) ब्रह्म ही है।"

जब वृक्ष, नदी, पर्वत सभी ब्रह्म के रूप हैं, तो उनका विनाश आत्म-विनाश के समान है। ईशोपनिषद (१.१) के अनुसार समस्त जगत ईश्वर से आवृत है - इसलिए प्रकृति के किसी भी अंग का दोहन नहीं किया जाना चाहिए।

तैत्तिरीय उपनिषद (२.१) में 'पंचकोश' सिद्धांत के माध्यम से अन्नमय (स्थूल प्रकृति) से लेकर आनंदमय (चेतना) तक के अभेद को दर्शाया गया है। इस प्रकार उपनिषदों का अद्वैत दर्शन पर्यावरणीय चेतना का सबसे गहरा दार्शनिक आधार प्रदान करता है। यह प्रकृति को 'दैवीय' मानता है, जो आधुनिक 'डीप इकोलॉजी' आंदोलन के मूलभूत सिद्धांतों से पूर्णतः मेल खाता है।

३. पुराण

पुराणों ने वैदिक एवं उपनिषदीय सिद्धांतों को कथात्मक एवं व्यवहारिक रूप प्रदान किया, जिससे आम जन भी इन्हें समझ सके और अपने दैनिक जीवन में अपना सके। मत्स्यपुराण (१२१.१५-१६) में वृक्षारोपण एवं संरक्षण का महत्व बताया गया है:

एकं वृक्षं रोपयित्वा यथाशक्त्या च पालयेत्।

"एक वृक्ष लगाकर यथाशक्ति उसकी रक्षा करनी चाहिए।"

विष्णुपुराण (३.११.४५) के अनुसार जो व्यक्ति एक कूप (कुआँ), तालाब, वाटिका (उद्यान) अथवा वृक्ष का निर्माण या रोपण करता है, वह जीवन्मुक्त होता है। भागवत पुराण (१०.२२.२५) में वृक्षों को देवता का दर्जा देते हुए कहा गया है कि वृक्ष परोपकार का महान प्रतीक हैं, जो बिना किसी स्वार्थ के फल, फूल, छाया और ऑक्सीजन देते हैं। पुराणों में वृक्षों को काटने पर पाप का विधान (प्रायश्चित्त) भी मिलता है, जो धार्मिक-आध्यात्मिक दंड व्यवस्था है। यह बताता है कि प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण समुदाय एवं व्यक्ति के आत्म-अनुशासन और धार्मिक आस्था पर निर्भर था।

४. रामायण-महाभारत

वाल्मीकि रामायण में प्रकृति का अत्यंत जीवंत एवं संवेदनशील वर्णन मिलता है। अरण्यकाण्ड में पंचवटी का वर्णन - जहाँ नदी, पर्वत, वृक्ष, पशु-पक्षी सब एक साथ सुखपूर्वक रहते हैं - एक आदर्श

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पारिस्थितिकी तंत्र का चित्रण है। राम प्रकृति के मित्र हैं; वे कहते हैं (रामायण, ३.१५.१६):

वृक्षाः परोपकारार्थं फलन्ति निजहेतवे।

"वृक्ष दूसरों के उपकार के लिए फलते हैं, अपने लिए नहीं।"

महाभारत (शांतिपर्व १४२.४६-४७) में 'भूमि-पुत्र न्याय' अत्यंत महत्वपूर्ण है:

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

"पृथ्वी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।"

इस भावना का अर्थ है कि जैसे पुत्र माता का सम्मान करता है, उसकी रक्षा करता है, वैसे ही मनुष्य को पृथ्वी की रक्षा करनी चाहिए। भीष्मपर्व (६.१०.१५) में भीष्म कहते हैं कि पृथ्वी की रक्षा करना सबसे बड़ा धर्म है। अरण्यकपर्व में मुनि दुर्वासा द्वारा प्रकृति के प्रति अनादर का दुष्परिणाम (दुर्वासा शाप प्रसंग) दर्शाकर यह बताया गया है कि प्रकृति का अपमान करने वाला अंततः नष्ट हो जाता है। इस प्रकार रामायण एवं महाभारत में प्रकृति का मानवीकरण कर उसके प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना को प्रबल किया गया है।

५. अर्थशास्त्र

कौटिल्य के अर्थशास्त्र (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) में पर्यावरण प्रबंधन को राज्य के दायित्व में रखा गया है। यह विश्व का सबसे प्राचीन राज्य-प्रायोजित पर्यावरणीय कानून है। अर्थशास्त्र (३.१९) में वनों का चार भागों में वर्गीकरण किया गया है:

- **हस्तिवन:** हाथी वन (प्राथमिक संरक्षण क्षेत्र, जहाँ कोई कटाई नहीं)
- **मृगवन:** वन्यजीव अभयारण्य
- **द्रव्यवन:** उपज (ईंधन, लकड़ी) के लिए वन
- **वनपाल:** वनों का अधीक्षक

कौटिल्य ने शासन को निर्देश दिया है (२.२.१३):

निगमराष्ट्रवनं च कुर्यात्।

"नगरों, ग्रामों एवं वनों का समुचित प्रबंधन करें।"

वृक्षों की कटाई पर दंड का प्रावधान (३.१९.२८) - फलदार वृक्ष काटने पर जुर्माना, वन्यजीवों के शिकार पर प्रतिबंध, जलाशयों की सुरक्षा का विधान। कौटिल्य ने ग्रीष्म ऋतु में कुओं एवं तालाबों की सफाई का निर्देश भी दिया है। यह दर्शाता है कि मौर्य काल तक पर्यावरण संरक्षण राज्य का संवैधानिक दायित्व बन चुका था।

६. बौद्ध-जैन परंपरा

बौद्ध और जैन परंपराओं ने 'अहिंसा' को पर्यावरणीय नैतिकता का आधार बनाया, जो संपूर्ण विश्व में अपने आप में अद्वितीय है।

बौद्ध परंपरा:

बुद्ध का प्रथम उपदेश है - **सब्ब पापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा** (सभी पापों का त्याग, कुशल की स्थापना)। धम्मपद (१२९) में कहा गया है:

सब्बे तसन्ति दण्डस्स, सब्बे भायन्ति मच्चुनो।

"सभी दंड से डरते हैं, सभी मृत्यु से भय खाते हैं - इसलिए दूसरों को न मारें, न मरवाएँ।"

बुद्ध ने वृक्षारोपण को पुण्य कार्य बताया (अंगुत्तर निकाय ५.१६८): विद्वान जन वाटिका लगाएँ, वृक्ष लगाएँ, पुल बनाएँ। सम्राट अशोक (२७४-२३२ ईसा पूर्व) के शिलालेख (संख्या ५) में पशु-बलि पर प्रतिबंध, वन्यजीव अभयारण्यों की घोषणा, तथा औषधीय वृक्षों के रोपण का निर्देश दिया गया है। अशोक ने अपने साम्राज्य में 'अभयदान' (भय से मुक्ति) की नीति लागू की, जिसके तहत किसी भी प्राणी को मारना या उसे कष्ट देना वर्जित था।

जैन परंपरा:

जैन धर्म का मूल सूत्र है - **परस्परोपग्रहो जीवानाम्** (तत्त्वार्थ सूत्र ५.२१):

"सभी प्राणी एक-दूसरे के सहायक हैं।"

यह आधुनिक पारिस्थितिकी के 'परस्पर निर्भरता' (interdependence) सिद्धांत का आदर्श वाक्य है। आचारांग सूत्र (१.४.१) में कहा गया है:

सव्वे जीवा सव्वे भूता सव्वे सत्ता सव्वे पाणा।

"सभी जीव, सभी प्राणी, सभी भूत, सभी सत्ताएँ - किसी की हिंसा न करना।"

जैन धर्म में 'एकेंद्रिय जीव' की अवधारणा के तहत वृक्षों, पानी, मिट्टी, वायु को भी संवेदनशील माना गया है। इसीलिए जैन साधु पानी छानकर पीते हैं, रात्रि में भोजन नहीं करते (ताकि सूक्ष्म जीवों की हिंसा न हो), और जमीन पर धीरे-धीरे पैर रखते हैं। यह शायद विश्व की सबसे व्यापक पारिस्थितिकी नैतिकता है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पर्यावरण संरक्षण की पारंपरिक भारतीय अवधारणाएँ

१. पंचमहाभूत - पारिस्थितिकी का आधार

भारतीय दर्शन के अनुसार संपूर्ण सृष्टि पाँच महाभूतों से बनी है - पृथ्वी (पृथ्वी), जल (आपः), अग्नि (तेज), वायु (मरुत्), आकाश (आकाश)। तैत्तिरीय उपनिषद (२.१) के अनुसार ब्रह्म से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई है। प्रत्येक भूत का मनुष्य एवं समाज के साथ घनिष्ठ संबंध है:

- **पृथ्वी (भूमि) संरक्षण:** अथर्ववेद (१२.१.६) में पृथ्वी की स्तुति करते हुए कहा गया है कि सत्य, ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ - ये पृथ्वी को धारण करते हैं। अर्थात् नैतिक आचरण से ही भूमि का संरक्षण संभव है।
- **जल संरक्षण:** ऋग्वेद (१०.९.१) में जल को अमृत कहा गया है: हे जल! आप सुखकारी हैं। हमें ऊर्जा एवं दर्शन शक्ति प्रदान करें। चरक संहिता (सूत्र २७.३) में जल के दूषित होने पर विभिन्न रोगों की चर्चा की गई है।
- **अग्नि (ऊर्जा) प्रबंधन:** अग्नि केवल रसोई की अग्नि नहीं, बल्कि 'वैश्वानर अग्नि' (पृथ्वी की आंतरिक ऊर्जा) की अवधारणा दी गई है। कूड़ा-करकट, रासायनिक पदार्थ अग्नि में न डालने का संकेत यहाँ से मिलता है।
- **वायु संरक्षण:** वायु को प्राण-वायु का दर्जा दिया गया है। योग की परंपरा में 'प्राणायाम' वायु की शुद्धता पर ही निर्भर है। वायु प्रदूषण को अधर्म की संज्ञा दी गई।
- **आकाश (अंतरिक्ष) संरक्षण:** अर्थशास्त्र (२.३६) में धूल एवं धुएँ से होने वाले प्रदूषण पर रोक लगाने का निर्देश है, जो आकाश प्रदूषण के प्रति जागरूकता का प्राचीन प्रमाण है।
- इस प्रकार पंचमहाभूत सिद्धांत 'पारिस्थितिकी तंत्र' (इको-सिस्टम) की आधुनिक अवधारणा से पूर्णतः मेल खाता है, जहाँ प्रकृति का कोई भी अंग अलग से स्थिर नहीं है, बल्कि सभी परस्पर जुड़े हुए हैं।

२. वसुधैव कुटुम्बकम् - वैश्विक पर्यावरणीय नैतिकता

यह अवधारणा महाभारत (शांतिपर्व ६.७१.१०) में मिलती है:

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
"यह अपना है, वह पराया है - यह गणना संकीर्ण मानसिकता वाले करते हैं। उदार चरित्र वालों के लिए तो सारी पृथ्वी ही परिवार है।"

पर्यावरणीय व्याख्या में यह सिद्धांत सिखाता है कि वृक्ष, नदी, पशु-पक्षी, पर्वत, अन्य मानव-जातियाँ - सब हमारे परिवार के सदस्य हैं, अतः उनका शोषण नहीं होना चाहिए। यह अवधारणा आधुनिक 'कॉस्मोपॉलिटन इकोलॉजी' (पारिस्थितिकी वैश्विकता) से मेल खाती है और भारतीय विदेश नीति के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सिद्धांत का आधार भी है।

यही भावना 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की शांति प्रार्थना में भी मिलती है:

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।
"सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों, सभी कल्याण देखें, किसी को दुःख न मिले।"

यहाँ 'सभी' से केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु सभी प्राणी, सभी पेड़-पौधे, संपूर्ण प्रकृति अभिप्रेत है।

३. पवित्र उपवन (Sacred Groves) - सामुदायिक संरक्षण का अनोखा मॉडल

'सैक्रेड ग्रोव' (देव-वन, देवराई, कावु, सरना, ओरण) वन के वे टुकड़े हैं जिन्हें धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण कभी नहीं काटा जाता। भारत में ऐसे अनुमानित १,००,००० से १,५०,००० पवित्र उपवन हैं। प्रमुख उदाहरण:

- **पश्चिमी घाट (महाराष्ट्र-गोवा-कर्नाटक-केरल):** 'देवराई' या 'कावु' - प्रत्येक गाँव में एक देवी/देवता का वन, जहाँ कोई कटाई नहीं होती। केरल में २००० से अधिक 'कावु' हैं।
- **राजस्थान (बिश्नोई):** 'ओरण' (पवित्र वन) - प्रत्येक बिश्नोई गाँव के निकट एक ओरण

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

होता है, जहाँ मरुस्थलीय प्रजातियाँ (खेजड़ी, रोहिड़ा) संरक्षित हैं।

- **मध्य प्रदेश (बैगा, गोंड जनजाति):** 'सरना' वन - जहाँ आदिवासी देवताओं का वास माना जाता है।
- **हिमाचल प्रदेश (कुल्लू):** 'देव-बन' - १९७० के दशक तक ६० से अधिक देव-बन थे।

शोध (गाडगिल एवं गुहा, १९९२; रमन, २०२०) के अनुसार पवित्र उपवनों में जैव विविधता सामान्य वनों से ३०-४०% अधिक होती है। यहाँ कई दुर्लभ एवं लुप्तप्राय प्रजातियाँ संरक्षित हैं। पवित्र उपवन दर्शाते हैं कि धार्मिक विश्वास किस प्रकार सबसे शक्तिशाली संरक्षण उपकरण बन सकता है।

४. बिश्नोई परंपरा - विश्व का प्रथम पर्यावरण आंदोलन

बिश्नोई समुदाय (राजस्थान) की स्थापना सन १४८५ ई. में गुरु जम्भेश्वर जी ने की थी। उनके २९ नियम (बिश्नोई का अर्थ है 'बीस + नौ') में से ८ नियम सीधे पर्यावरण संरक्षण से जुड़े हैं:

1. हरित वृक्षों की कटाई न करना
2. पशुओं की हत्या न करना
3. खेजड़ी वृक्ष की रक्षा करना (गुरु जम्भेश्वर ने खेजड़ी को सबसे पुण्यदायी बताया)
4. पानी को व्यर्थ न बहाना
5. वन्यजीवों का शिकार न करना
6. हरा चारा नहीं काटना
7. नींद में भी हिंसा न करना
8. प्रकृति की रक्षा को जीवन का लक्ष्य बनाना

सन १७३० में जोधपुर के राजा अभय सिंह के सैनिकों द्वारा खेजड़ी वृक्ष काटने पर **अमृता देवी बिश्नोई** के नेतृत्व में ३६३ बिश्नोई लोगों ने वृक्षों से लिपटकर अपने प्राण न्योछावर कर दिए। यह इतिहास का पहला दर्ज पर्यावरण बलिदान था। इस घटना के बाद राजा ने उस क्षेत्र में वृक्ष कटाई पर स्थायी प्रतिबंध लगा दिया। आज भी बिश्नोई समुदाय बिना किसी कानूनी दबाव के इन नियमों का पालन करता है। बिश्नोई परंपरा पर्यावरण रक्षा में सामुदायिक समर्पण का अनुपम उदाहरण है।

५. जल संरक्षण की पारंपरिक प्रणालियाँ

भारत ने जल संग्रहण एवं संरक्षण की अद्भुत प्रणालियाँ विकसित की थीं, जो उस समय विश्व में अद्वितीय थीं:

- **स्टेपवेल्स (बावड़ी):** राजस्थान, गुजरात में - कदमदार कुएँ। चाँद बावड़ी (अबानेरी, राजस्थान) सन ८०० ई. में बनी, जिसमें ३५०० सीढ़ियाँ हैं।
- **कुंड (टांका):** राजस्थान में वर्षा जल संग्रहण की छोटी टंकियाँ। प्रत्येक घर में वर्षा जल को एकत्रित करने की व्यवस्था।
- **खदीन (धोरा):** पश्चिम राजस्थान की भू-जल पुनर्भरण तकनीक, जो बरसात के पानी को रोककर जमीन में सोखने का काम करती है।
- **एरी (सिंचाई तालाब):** तमिलनाडु - आज भी ५००० से अधिक एरी कार्यरत हैं, कुछ २००० वर्ष पुराने हैं।
- **कुल:** हिमाचल प्रदेश - लकड़ी के पाइपों से सिंचाई की १६वीं शताब्दी की प्रणाली।
- **जोहड़:** ग्रामीण राजस्थान - गाँव का मुख्य जल स्रोत, वर्षा जल एकत्र करने के लिए छोटे तालाब।
- **पाइप (मध्य प्रदेश, बुंदेलखंड):** वर्षा जल एकत्रीकरण की बहु-स्तरीय प्रणाली।

ब्रिटिश शासन के आगमन तक भारत में लगभग ५ लाख से अधिक ऐसी जल संरचनाएँ कार्यरत थीं। स्वतंत्रता के बाद सरकार ने केंद्रीकृत नल-जल और नहरी योजनाओं पर अधिक ध्यान दिया, जिससे ये पारंपरिक प्रणालियाँ उपेक्षित हो गईं। अब जब जल संकट गहराता जा रहा है NITI आयोग के अनुसार २०३० तक २१ शहरों का भूजल समाप्त होने की संभावना), तब इन प्रणालियों का पुनरुद्धार अत्यंत आवश्यक हो गया है। प्रधानमंत्री 'जल शक्ति अभियान' (२०१९) में पारंपरिक जल निकायों के जीर्णोद्धार पर विशेष बल दिया गया है।

६. चिपको आंदोलन (१९७३-१९८१) - सामूहिक प्रतिरोध का प्रतीक

चिपको आंदोलन (गढ़वाल-कुमाऊँ हिमालय) ने दुनिया का ध्यान भारतीय पर्यावरण चेतना की

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

ओर खींचा। **चिपको** का शाब्दिक अर्थ है - 'लिपट जाना' (गले लगाना)। ग्रामीण महिलाओं (गौरा देवी, सुधा रानी, बचनी देवी, मैना देवी) ने वृक्षों से लिपटकर उनकी रक्षा की। यह आंदोलन तब शुरू हुआ जब सरकार ने वन क्षेत्रों को लकड़ी कंपनियों को दे दिया।

मूल नारे थे: **"वृक्ष बचाओ, पेड़ लगाओ"**, **"जंगल हमारी जान है"**।

प्रेरक थे: **चंडी प्रसाद भट्ट, सुंदर लाल बहुगुणा, धूम सिंह नेगी** (जिन्होंने संगठन की कमान संभाली)।

परिणामस्वरूप, १९८० में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने १५-वर्षीय वन कटाई प्रतिबंध लगा दिया।

१९८८ में भारत की राष्ट्रीय वन नीति में आमूल-चूल परिवर्तन किया गया, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी को अनिवार्य बनाया गया। चिपको ने सिद्ध कर दिया कि पारंपरिक भारतीय 'प्रकृति-पूजा' का दर्शन आधुनिक संघर्ष का रूप ले सकता है। यह आंदोलन विश्व के सबसे सफल हरित आंदोलनों में गिना जाता है और इसने पर्यावरण-नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) को जन्म दिया।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

1. जलवायु परिवर्तन

'ऋत' के प्रति आदर, अपरिग्रह (कम उपभोग) और नवीकरणीय ऊर्जा को 'यज्ञ' की तरह अपनाना - ये भारतीय दृष्टिकोण प्रासंगिक हैं। 'लाइफ स्टाइल फॉर एनवायरनमेंट (LiFE)' आंदोलन (2022) इसी पर आधारित है।

2. प्रदूषण

वायु-अग्नि-जल की पूजा ने स्वच्छता का संदेश दिया। 'नमामि गंगे' योजना (2014) में 20% सुधार आया है। धार्मिक स्थलों की सफाई परंपरा को आधुनिक कानूनों से जोड़ना आवश्यक है।

3. जैव विविधता ह्रास

पवित्र उपवनों में 700 से अधिक प्रजातियाँ संरक्षित हैं। 'वृक्षायुर्वेद' में 400 प्रजातियों का विवरण है। जैन अहिंसा के कारण 40% जैन समुदाय शाकाहारी है।

4. जल संकट

राजस्थान में 11,000 जोहड़ों के पुनरुद्धार से 1,000 गाँवों में जल स्तर 20 फुट ऊपर आया है। 'जल (प्रदूषण एवं संरक्षण) संशोधन विधेयक' (2023) में पारंपरिक जल निकायों को संरक्षण में रखा गया है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा पर्यावरण को यंत्रवत न मानकर सजीव, आध्यात्मिक सत्ता के रूप में देखती है। पंचमहाभूत सिद्धांत, वसुधैव कुटुम्बकम्, ऋत एवं धर्म की अवधारणाएँ समग्र पारिस्थितिकी दृष्टि प्रदान करती हैं। बिश्नोई बलिदान, पवित्र उपवन, चिपको आंदोलन यह प्रमाणित करते हैं कि यह ज्ञान लोक-जीवन में जीवंत था। समकालीन जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल संकट एवं जैव विविधता ह्रास के समाधान में यह परंपरा अत्यधिक प्रासंगिक है।

सुझाव: (1) पाठ्यक्रम में भारतीय पर्यावरणीय अवधारणाओं को शामिल किया जाए। (2) पारंपरिक जल प्रणालियों का पुनरुद्धार किया जाए। (3) पवित्र उपवनों को कानूनी संरक्षण दिया जाए। (4) अमृता देवी के नाम पर राष्ट्रीय पुरस्कार स्थापित किया जाए।

'प्रकृतिः रक्षति रक्षिता' - प्रकृति की रक्षा करने वाला ही सुरक्षित रहता है।

संदर्भ सूची

- Agarwal, A. (2020). *The state of India's environment 2020*. CSE.
- Chapple, C. K. (1993). *Nonviolence to animals, earth, and self*. SUNY Press.
- Gadgil, M., & Guha, R. (1992). *This fissured land*. Oxford University Press.
- Guha, R. (1989). *The unquiet woods*. Oxford University Press.
- Kautilya. (1992). *The Arthashastra* (L. N. Rangarajan, Trans.). Penguin.
- Nelson, L. E. (Ed.). (1998). *Purifying the earthly body of God*. SUNY Press.

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

- Shiva, V. (1989). *Staying alive*. Zed Books.
- Basu, R. (2019). Vedic environmental ethics. *J. Indian Phil. Relig., 24*, 45-67.
- Habib, I. (2015). Ecology in ancient Indian texts. *Indian Historical Review, 42*(2), 213-234.
- Nanda, M. (2016). Vasudhaiva Kutumbakam. *Economic & Political Weekly, 51*(14), 32-38.
- Raman, S. (2020). Sacred groves biodiversity. *J. Ecological Studies, 15*(2), 112-130.
- CPCB. (2023). *Ganga water quality status 2023*. MoEFCC.
- IPCC. (2022). *Climate change 2022: Impacts*. Cambridge University Press.
- NITI Aayog. (2019). *Composite water management index*. Govt. of India.
- *Rigveda*. (2010). (S. Jamison & M. Witzel, Trans.). Harvard University Press.